— दो शब्द —

आत्मा—अनादि काल से मोह मिथ्यात्व में मस्त रहकर जन्म मरण की चक्कीमें पड़कर अनेक विध दुःखोंको पाता है। उस जन्म मरण की चक्की को तोड़ने के लिये आत्माको श्री सर्वज्ञ कथित धर्म की आराधना करनी चाहिये।

यह मानवजन्म बड़ा किंमती है, बहुत दुर्लभ है, महा पुण्यसे मिला है। देवता भी इस जीवन की चाहना करते हैं। इसका कारण एक ही है कि जैसी त्याग धर्मकी आराधना यहां हो सकती है, वैसी आराधना कोसी अन्य गतिमें नहीं हो सकती है। परमात्मा जिनेश्वर देवने दो प्रकारके धर्मकी प्ररूपणा की— एक साधुधर्म दूसरा श्रावक धर्म। साधुधर्म— पालनमें जो असमर्थ है उनके दूसरा लिये मात्र श्रावक धर्मका बताया है। जीवनमें जितनी भी त्यागधर्म की— आराधना हो सके, जितना भी व्रतनियमका पालन हो सके उतना ही जीवन धन्य समझना। उपयोग रखना—और पापकी प्रतिज्ञा—लेलेना तो बहुतसे पापसे बच सकता है। मेरु और सरसव में जितना अंतर है उतना अंतर त्याग-प्रतिज्ञा और छुट्टीमें है।

प्रस्तुत पुस्तकमें बारह व्रतका संक्षिप्त स्वरूप— बतलाया गया है। व्रतोंको समझकर आत्मा व्रतीजीवन बनावें— तो हमारा यह प्रयत्न सफल होगा।

अरिहता मह देवो

जावज्जीव सुसाहूणो गुरुणो

जिणपन्नत्त तत्त

इअ सम्मत्त मए गहिअ

चत्तारि मगल

अरिहता मगल

सिद्धा मगल

साहू मगल

केवलि पन्नत्तो धम्मो मगल

॥ णमो जिणाणं ॥

श्री आत्मकमल लब्धिसूरीश्वरेभ्यो नम

श्री आत्मकमल लब्धिसूरीश्वरजी
जैन ग्रंथ मालाया–अष्टम पुष्पम्

बारह व्रत की नोंध

धर्मस्नेही ——————————————

मु —————————— सप्रेम भेट

प्रकाशक—
श्री आत्मकमल लब्धिसूरीश्वरजी जैन ज्ञान मंदीर
ऑसम्बेन, दादर, बी बी २८

प्रथमावृत्ति
प्रत १०००

कोल्हापूर

संवत २००८
फाल्गुन शुद्ध तृतीया



मुद्रक—
बा. गो. ठकार,
श्रीसिद्धेश्वर प्रेस, कोल्हापूर

☆ स्वर्गीय ☆

पूज्य मातुश्री पार्वतीदेवी

के

चरण कमलों में

समर्पण

विनित पुत्र

हेमचंद जेठमल परमार,

मोतीलाल जेठमल परमार,

शा कांतिलाल जेठमल परमार,

सराफ़ गुजरी, कोल्हापुर

卐 बारह व्रत की नोंध 卐

सम्यक्त्व,

सुदेव—अरिहंत श्री अठारह दोषों से मुक्त और बारह गुणों के धारक।

सुगुरु—पांच महाव्रतधारी और शुद्धधर्म के उपदेशक।

सुधर्म—श्री जीनेश्वर भगवंतने कथन कीया हुआ अहिंसा, संयम और तप प्रधान धर्म।

१ पहला व्रत

स्थूल (देश से) प्राणातिपात विरमण व्रत-निरपराधि त्रस यानि हलने चलने जीवों को इरादापूर्वक, मारने की बुद्धि से नहीं मारना।

गृह कुआ, नदी, तालाव आदि के आरंभ समारंभ तथा व्यापार और औषधि आदि के कारण जयणा।

पहले व्रत के पांच अतिचार—

१ वध—क्रोध के आवेश में गाय, घोडा इत्यादि मनुष्य जानवरों को मारना।

२ बंध—गाय, भैंस, बैल इत्यादि जानवरों को कसकर बांधना।

३ छविच्छेद—बैल इत्यादि जानवरों के कानों का छेदन करना और नाथ डालना।

४ अतिभारारोपण—जानवरों पर उनकी ताकत से ज्यादा बोझा ढोना।

५ भात पाणी का विच्छेद—गाय, ढोर इत्यादि जानवरों को उनके रोज के चार मुताबिक कम देना या गैर समय में देना।

२. दूसरा व्रत

स्थूल (देश मे) मृषावाद विरमण व्रत—पाच मोटे झूठ नहीं बोलना।

१ कन्या सबधि—कन्या के सगपण या विवाहादि कार्य के समय उसके बारे मे झूठ नहीं बोलना तथा दोपैर वाले सब मनुष्यो के बारे मे झूठ नहीं बोलना इरादपूर्वक जानतहुए झूठ नहीं बोलना।

२ ढोर सबधि—गाय वगैरे चारपैर वाले पशुओ की उम्र तथा दूध आदि के बारे मे झूठ नहीं बोलना। नालन का उपयोग रखना चाहिये।

३ भूमि सबधि—जमीन खेत, मकान दुकानवाडी आदि के बारे मे झूठ नहीं बोलना। दुसरे की जमीन पर अपना हक नहीं दिखाना।

४ थापण सबधि—दूसरो की थापण को नहीं पचाना चाहिये। उसका मालिक नहीं देवे जब तो जयणा रखनी चाहीये।

५ झूठी साक्षी—झूठी साक्षी नहीं देना। कीसी को देहान्त शिक्षा (फासी) वगैरा की शिक्षा होती हो उसमे असत्य बोलना पडे तो जयणा।

उपर के नियमो मे नोकरी वगैरा मे फाजीयात झूठ बोलना पडे तो जयणा।

दूसरे व्रत के पाच अतिचार—

१ सहसात्कार—जैसा मनमे आया वैसा बीना सोचे विचारे समझे बोलना।

२ रहस्य भाषण–किसी की गुप्त बात को जाहीर में नहीं कहना।

३ विश्वासु का मन्त्र भेद —अपनी स्त्री आदि विश्वासु मनुष्यो की नींद नहीं करनी।

४ झूठा उपदेश –झूठा उपदेश तथा झूठी सलाह या साक्षी नहीं देनी।

५ कुटलेख—झूठा दस्तावेज लिखवाना तथा लिखे गये अक्षरो को मिटाना —

३ तीसरा व्रत

स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत।

१ कीसी के घर में खातर खन [illegible] पास दिलाना नहीं—

२ गाठ नहीं छोडनी।

३ खीसे (जेब) नहीं काटने।

४ ताला नहीं तोडना।

५ लूटफाट नहीं करनी।

६ कीसी की भी पडी हुइ चीज [illegible]

७ दान व्रत (शिक्षा) कर [illegible]
ऐसी चोरी नहीं करनी

तीसरे व्रत के पाच अतिचार—

१ चोर के पास से जानते [illegible]

२ तस्कर–चोरको चोरी करने [illegible]

३ तत्प्रतिरूप — अच्छी [illegible]
भेलमेल (मिलावट) [illegible]
बनाकर खराब नहीं [illegible]

४ विरुद्धगमन—राज्य [illegible]
नियम के विरुद्ध [illegible] जाना।

५ [illegible]

४ चौथा व्रत

मैथुन विरमण व्रत—

परस्त्री गमन का त्याग करना तथा स्वस्त्री [illegible] अथवा स्त्री विवाहित स्त्री के सिवाय सब स्त्रियों का त्याग करना और पुरुष स्त्रियों के साथ विषय का त्याग। और [illegible] पालन करना चौथे व्रत के पांच अतिचार

१ अपरिगृहीतागमन–जिसके साथ [illegible] ऐसी स्त्री के साथ (सगाई [illegible]) गमन करना।

२ इत्वर परिगृहीतागमन–थोड़े दिनों के लिए [illegible] या [illegible] स्त्री के साथ गमन करना।

३ अनंगक्रीड़ा–अप्राकृतिक विषय [illegible] और काम चेष्टा करना।

४ परविवाहकरण–दूसरों के विवाह आदि करना।

५ [illegible]–काम भोग में तीव्र अभिलाषा रखना।

५. पांचवां व्रत

परिग्रह परिमाण व्रत —

१ खेत   २ धान्य-अनाज वगैरा
३ मकान मिलकत घर, दुकान, बगीचा आदि
४-५ सोना, चांदी, माणिक, हीरा आदि रत्न।
६ फर्नीचर घर का उपस्कर सामान, खाट खटोला, बासन इत्यादि।
७ नौकर चाकर। ८ चार पैरोवाले जानवर। ९ अन्न भंडार।

इत्यादि नौ प्रकार के परिग्रह का परिमाण करना और परिमाण से ज्यादा अधिक धन बढ़ जाय तो धर्मादि मार्ग पर दे देना चाहिये।

पांचवें व्रत के पांच अतिचार —

१ धनधान्यपरिमाण विरम — जिस समय परिमाण से ऊपर धन बढ़ जाये तो अपने पुत्र, स्त्री, भाई आदि के नाम का करना या उसके दाखिल कर देना।

२ क्षेत्र परिमाण विरम—क्षेत्र परिमाण नियम से ज्यादा रखना।

३ सोना, चांदी नियम से ज्यादा रखना।

४ तांबा, पीतल आदि नियमसे ज्यादा रखना।

५ गाय, भैंसी तथा घोड़ा, ऊंट आदि जानवरों का परिमाण से ज्यादा रखना।

६ छट्ठा व्रत

दिशि परिमाण व्रत (गुण व्रत)

चार मुख्य दिशाएं चार विदिशाएं ऊपर तथा नीचे मिलकर दस दिशाओंमें जाने आने का नियम करना।

इसमें उपरांत पत्र, तार, समाचारपत्र लिखने या पढ़ने या दूसरे किसीको भेजने की जयणा।

पांच अतिचार—

१ ऊर्ध्वदिश परिमाणातिक्रम—मर्यादा से ज्यादा ऊपर या नीचे जाना।

२ अधोदिश परिमाणातिक्रम—चार दिशाओं की मर्यादा को उलंघना।

३ तिर्यग्दिश परिमाणातिक्रम—सब दिशाओं के कोनों को एकत्र करके एक दिशा में ज्यादा जाना।

४ क्षेत्र वृद्धि—अपनी स्वेच्छा से धारे हुए परिमाण में वृद्धि या हानि करना।

५ स्मृति अन्तर्धान—किस चीज का परिमाण कीया यह भूल जाना और आगे जाना तथा सन्देह होते हुए भी आगे जाना।

७ सातवां व्रत

सातमें भोगोपभोग विरमण व्रत (गुण व्रत)

भोग—एक दफे जो वस्तु उपयोग में आती है। जैसे भोजन विलेपन आदि वस्तुएँ।

उपभोग—बारबार जो वस्तु उपयोग में आती है। अर्थात् घर की कपड़े दागिने इत्यादि।

उपरोक्त वस्तुओं का परिमाण (सख्या और मापसे) करना उसके लिए चौदह नियमों को याद करना।

१ सचित्त—दिन में सचित्त द्रव्य मुंह में डालें उसकी सख्या रखनी।

२ द्रव्य—जितनी चीजें मुहमें डाली तथा जितने स्वाद लेने के लिये ऐसे द्रव्यों की गिनती रखनी।

३ विगय—घी, गुड़, दूध, दही, तेल तथा तली हुई चीज इत्यादि छ विगयों का हर रोज एक विगय का मूल या कच्चे रुप में त्याग करनी।

४ वाणह उपानह जूते तथा मौजे इत्यादि की गिनती रखनी।

५ तंबोल—सुपारी, इलायची, सौंफ इत्यादि मुखवासकी चीजों का तोल रखना।

६ वत्थ—(वस्त्र) दिन में पहनने के कपड़ा की सख्या नियत करनी।

७ कुसुमेसु—नाकद्वारा सुंघने की वस्तु का तोल रखना।

३ कृषि—हल, कुदाली, पावडा इत्यादि की संख्या नियत करनी। उपरोक्त नियमों को हररोज सुबह और रातको याद कर।

विशेष—व्रतधारीओं को सातवा व्रत का पालन करने में पंद्रह कर्मादान (पाप व्यापार) को छोडना हीत कारक है।

१५ कर्मादान

१ अंगार कर्म—कुंभार, भडभुंजा, लुहार इत्यादिओं के अग्नि सम्बंधि कर्म उस सम्बंध में चुना, इंट, नलिये, इत्यादि चीजोंका व्यापार करना। (घर उपयोग के लिए उपरोक्त चीज करानी पडे, लानीपडे या बची रहे तो बचने की जयणा।)

२ वन कर्म—हरे पान, फूल फल लकडे, वनस्पति इत्यादि का व्यापार करना।

३ शकट कर्म—गाडी, हल, प्रमुख तैयार करने का व्यापार करना।

४ भाटक कर्म—गाडी, घोडा इत्यादि किराये देने का व्यापार करना।

५ स्फोटक कर्म—क्षेत्र, कुआ, बाव इत्यादि खोदना तथा सुरगमें जमीन फोडने का व्यापार करना।

६ दंत वाणिज्य—हाथीदांत वगैरा का व्यापार करना।

७ लाक्षा वाणिज्य—लाख या गुंद इत्यादि का व्यापार करना।

८ रसवाणिज्य—घी, तेल, गुड इत्यादिका व्यापार करना।

९ विष वाणिज्य—अफीम, झहर, वच्छनाग, सोमल इत्यादिका व्यापार करना।

१० केशवाणिज्य—पशु पक्षीके बाल, पंख, चम इत्यादि का व्यापार करना।

११ यंत्रमिलन कर्म – मील, जीन, सचा, चक्कीपाणी इत्यादिका व्यापार करना।

१२ निर्लांछन कर्म—बैल, घोडे, को नपुसक करना या करवाना, तथा नाक, कान या शरीर के दुसर हिस्से छेदना या छेदवाना।

१३ दवदान कर्म —वन म या सीम म कीसी भी जगह पर अग्निदाह देना या दिलवाना।

१४ जलशोषण कर्म—सरोवर, तलाव इत्यादि ओं के पानी को सुखाना या सुखवाना।

१५ असती पोषण—मनबहलाव के हेतु या क्रीड़ा करन के हेतु कुत्ते, बिल्ली, तोता, मैना इत्यादि को पालना, तथा असती स्त्री वेश्या आदियों का पोषण करना।

नोध—उपरोक्त—पंद्रह कर्मादान को देशसे या सवसे त्याग करना या जयणा रखनी

सातवे व्रत के पाच अतिचार—

१ सचित्त आहार—सचित्त वस्तु खाना।

२ सचित्त प्रतिबद्ध आहार—सचित्त के साथ की मिश्रवस्तु खाना।

३ अपक्व आहार—बराबर नहीं पकी हुइ वस्तु खाना।

४ दुष्पक्व आहार—खराब रीत स पकाइ हुई (मिश्रित) वस्तु खाना।

५ तुच्छौषधि भक्षण—खाने के काम म थोडा आवे और ज्यादा बाहर फेंकना पड ऐसी वस्तु खाना। जैसे गन्ना, दाडम, बेर इत्यादि।

नोंध—पाच अतिचार तथा पंदर कर्मादान के पंद्रह अतिचार मिलकर सातवें व्रत के कुल २० (बीस) अतिचार

चौदह नियम—

	धारी हुई	वापरी हुई	लाभ में
सचित्त			
द्रव्य			
विगई			
पाणह			
तंबोल			
वस्त्र			
कुसुम			
वाहन			
शयन			
विलेपन			
ब्रह्मचर्य			
दिशी			
स्नान			
भात पाणी			
पृथ्वीकाय			
अपकाय			
तेउकाय			
वायुकाय			
वनस्पतिकाय			
असि			
मसी			
कृषि			

८ आठवां व्रत

अनर्थदंड विरमण व्रत—

किसी भी पशु, पक्षी को क्रीडा के हेतु से घर पर पालना नहीं, उसमें भी कुत्ते बिल्ली आदि हिंसक प्राणीयों को अवश्य नहीं पालना चाहीये।

हाथी, घोड़ा, बकरा, मुर्गा इत्यादि की जहाँ पर लड़ाई होती हो वहाँ पर देखने के हेतु से नहीं जाना। मार्ग में चलते चलते दिख पड़े तो उसकी जयणा। किसी को भी फांसी दी जाती हो वह भी नहीं देखनी।

बन सके जहा तक स्त्री कथा, राजकथा, देशकथा या भोजन कथा, अकारण नहीं करनी। रास्तेमें चलते चलते पेड़ों से फल, फुल या पत्ते नहीं तोड़ना। शस्त्र का व्यापार भी नहीं करना। घर के लिए रखना पड़े तो जयणा।

घट्टी, (चक्की) ओखली, मावेला, हल, कुदाला कोष आदि उपकरण तैयार रख मागने पर नहीं देने।

पांच अतिचार ——

१ कंदर्प—विकार बढ़े ऐसी कुचेष्टा करनी।
२ कौकुच्य—काम-उत्पन्न करे ऐसी बातें करनी।
३ मौखर्य—मुहमें हसने के हेतु से जैसा तैसा या किसी की गुप्त बात प्रकट करनी पापे ऐसा बोलना।

४ संयुक्ताधिकरण—अपनी जरूरीयात से ज्यादा अधिकरण इकट्ठे करना।

५ भोगातिरीक्तता—भोग तथा परिभोग म वापरने में आती हुई चीजों मे ज्यादा तैयार रखना।

९ नौवां व्रत

सामायिक व्रत—

हमेशा सामायिक करने का नियम। शरीरादिक कारणसे आगे पीछे करना होवे तो ऐसा धारना। व्रत धारी को बने वहाँ तक रोज एक सामायिक अवश्य करनी चाहिये।

पांच अतिचार—

१ मन दुःप्रणिध्यान—मन म कुविकल्प (खराब वीचार) चितवना तथा मन को दुष्ट करके प्रवतनाना।

२ वचन दुःप्रणिध्यान—सावद्य वचन बोलना वचन से दुष्ट प्रवर्तना।

३ काय दुःप्रणिध्यान—सामायिकम शरीर को हीलाना, हुलाना, भींत के सहाय से बैठना तथा नींद लेनी।

४ अनवस्था दोष—जिस समय से सामायिक लिया उस समय से न पारे या जल्दी पारे।

५ स्मृति विहीन—सामायिक लेकर समय भूले या पारना भूले।

दसवां व्रत

देशावगासिक व्रत—

देशावगासिक यानि ८ सामायिक तथा दो प्रतिक्रमण (सुबह तथा शामका) की सामायिक मिलकर कुलदस सामायिक करना। वर्ष में कमसे कम एक ऐसा धार्मिक करना। अेकासण उपवास आदि पच्चरखाण कर व चौदह नियम धार।

पांच अतिचार—

१ आनयन प्रयोग-धारी हुई भमीसे परात से वस्तु मगवाना।
२ पष्य प्रयोग—हदसे बाहर चीज भेजनी।
३ शब्दानुपात—शब्दद्वारा हद के बाहर से वस्तु मगवाना।
४ रुपानुपात—रुप दीखाकर हद के बाहर से वस्तु मगवाना।
५ पुद्गल प्रक्षेप—कंकड फेक कर हद के बाहेर से वस्तु मंगवाना तथा हद के बाहर रहनेवालोको मैं यहा हुं ऐसा बताने के हेतु कंकड फेंकना।

११ ग्यारहवा व्रत

पौषध व्रत—

हर वर्ष म आठ प्रहर या चार पहर का पौषध करना।
पौषध के मुख्य चार प्रकार—

१ आहार पौषध—देश से अेकासणा आयबिल।

२ शरीर सत्कार पौषध—शरीर का सत्कार नहीं करना।

३ अव्यापार पौषध—कीसी भी तरह का सासारीक व्यापार नहीं करना।

४ ब्रह्मचर्य पौषध—ब्रह्मचर्य पालना।

इसम पीछे के तीन प्रकार के पौषध तो सब स करने के है आहार पौषध देशसे और सर्व से दोनों प्रकार मे हो सकता है।

पाच अतिचार—

१ अप्रतिलेखित शय्या—सथाराए शय्या सतारक, सथारे की बरोबर पडिलेहणा नहीं करना।

२ अप्रमार्जित दुष्प्रमार्जित—शय्या सस्तारक शय्या, सथारा बराबर नहीं पुजना या प्रमार्जना।

३ अप्रति लेखित दुप्पति ज्चार—स्थंडिल, मात्रा की भूमि बराबर पडीलेहणा नहीं करना।

४ अप्रमा० दुप्रमा० ज्चार पासवण भूमि—स्थंडिल मात्रा की भूमि बराबर पडीलेहणा नहीं करना।

५ पौषध विधी विपरीतता—पौषध समय नहीं लेना तथा जल्दी पारना।

बारहवा व्रत

अतिथि संविभाग व्रत–

मूल रीतीसे आठ प्रहर का पौषध करना चौविहार उपवास करना और दुसरे दिन जिन पुनारके मुनिराज को प्रतिलाभ करके जितनी चीजें मुनिराज वहोरे उतनी ही चीज वापर कर एकासणा करे उसे अतिथि संविभाग व्रत कहते हैं।

यह व्रत वर्ष में जितना करना होवे उसकी संख्या धारे।

यदि संपूर्ण वर्ष में मुनिमहाराज का योग न बने तो साधर्मी भाई का जिमावें और व्रत का पालन करे।

पाच अतिचार—

१ सचित्त निक्षेप—सचित्त वस्तु को अचित्त वस्तु के साथ मिलाकर वोहराना।

२ सचित्त पिधान—सचित्त वस्तुद्वारा ढकी गई अचित्त वस्तु देना।

३ अन्य व्यपदेश—अपनी वस्तु दुसरे की है ऐसा कहकर नहींदेना। दुसरों की वस्तु अपनी कहकर देना।

४ मत्सरदान—मत्सर करके [illegible] का दानदेना।

५ कालातिक्रम—वहोराने का समय वितने के बाद दान देने का आग्रह करना।

इन पाच अतिचारों को टालकर साधु साध्वी को दान देना।

नोंध— उपरोक्त सम्यक्त्व मूल बारह व्रत के अतिचारों को जानकर व्रतधारी भवभीरु आत्मा अतिचार रुप मल से व्रत रत्न दुषित नहीं हो इसके लिए सावधानी रखे।

श्रीसम्यक्त्व.

पांच अतिचार—

१ शंका—जिन वचन में [illegible]
२ कांक्षा—दूसरे मत की [illegible]
३ विचिकित्सा—धर्म के फल में [illegible]
४ मिथ्यादृष्टि प्रशंसा—अन्य [illegible]
५ तत्संस्तव—अन्य धर्मी तथा [illegible]

छ आगार—

१ रायाभियोग—राजा अगर [illegible]
करना पड़े।
२ गणाभियोग—जनसमुदाय के [illegible]
३ बलाभियोग—चोरादिक के [illegible]
४ देवाभियोग—भैरवादि [illegible]
पड़े।
५ गुरुनिग्रह—मातापिता [illegible]
६ वृत्तिकांतार—आजीविका [illegible]

आगारों का उपयोग [illegible]
में दोष न लगे यह गुरु गम से [illegible]

मिथ्यात्व

पांच प्रकार—

१ अभिग्रहीक — अपने ग्रहण कीया हुआ कुदर्शन नहीं छोडे।
२ अनभिग्रहीक — सब दर्शन को समान माने।
३ अभिनिवेशिक — इरादापूर्वक मानपान के लोभसे सच्चे मार्ग को जानते हुए भी अपने मत को स्थापन करनेकी उल्टी परूपणादिक करे।
४ सांशयिक — सर्वज्ञ के वचन में शंका करे।
५ अनाभोगिक — असंज्ञी जीवों को अनुपयोग पणे बतावे।

छ प्रकार

१ लौकिक देवगत — रागद्वेषसे कुदेव को सुदेव तरीके माने।
२ लौकिक गुरुगत — अनेक आरंभ परिग्रह में रहनेवाले अन्य दर्शनीओं के गुरु को गुरु की बुद्धिसे माने।
३ ले ३ ।।।। —ौ किक पर्व होली बलेवादिक लोकोत्तर पर्वकी बुद्धिसे माने।
४ लोकोत्तरदेवगत — अठारह दोषों से मुक्त देव को इस लोक तथा परलोक के पौद्गलिक सुख के कारण माने।
५ लोकोत्तर गुरुगत — कंचन, कामी के त्यागी गुरुओं को इहलोक तथा परलोक के पौद्गलिक सुख के कारण माने और आहार पाणी आदि दे।

६ लोकोत्तर धर्मगत— सर्वज्ञ भगवान के कहे हुए दान, शील, तप, भाव रुप धर्म को इस लोक तथा परलोक के पौदगलिक सुख की अपेक्षा से करे

चार प्रकार

१ प्ररुपणा—जिन भाषित अर्थ से उलटी (विरुद्ध) प्ररुपणा करनी।
२ प्रवर्तन—लौकिक तथा लोकोत्तर मिथ्यात्व की क्रीया करनी।
३ परिणाम—मन में कुगुरु हठाग्रह रखे तथा केवली भाषित नव तत्वों के अर्थ ठीक न कहे।
४ प्रदेश—सत्तागत रहीहुइ मोहनीय कर्म की सात प्रकृति। इस प्रकार मिथ्यात्व के कुल २५ प्रकार हैं।



सामान्य बातें.

पचखाण

१ नवकारशी—सूर्योदय के बाद दो घडी याने ४८ मिनिट के बाद।
२ पोरसी—सूर्योदय के बाद एक पहर के बाद।
३ साढ पोरसी—सूर्योदय के बाद डेढ पहर के बाद।
४ परिमुढ—सूर्योदय के बाद दो पहर (पहला अर्ध दिन के के बाद।
५ अवड्ढ—सूर्योदय के बाद तीन पहर के बाद।

सूचना—पचखाण सूर्योदय के पहले लेना तथा टाइम होने के बाद नवकार गिनकर पालना चाहीये। सूर्योदय से लगाकर सूर्यास्त तक जितने घंटे हाय उसका चौथा भाग करने पर जीतने घंटे आवे वह एक प्रहर समझना।

श्रावक के घर में दस चंदरवे--

१ जिन भुवन (घर देरासर) २ सामायिकादि धर्म क्रिया करणेके स्थानपर (पौषधशाला) ३ चूल्हेपर ४ पाणियारापर ५ रसोई घरमे ६ घट्टीपर ७ उखलपर ८ मट्ठा (छाश) करने के स्थानपर ९ शय्यापर १० स्नान घरमे।

सात गरणे (छनने)

१ पानी छानने का २ घी छाननेका ३ तेल छाननेका ४ दूध छाननेका ५ छाछ छाननेका ६ अचित उष्ण जल छाननेका ७ आटादिक छानने की छननी वे (चालणी)

सात क्षेत्र--

१ जिन प्रतिमा २ देरासर ३ जिनागम ४ साधु ५ साध्वी ६ श्रावक ७ श्राविका

बत्तीस अनतकाय

१ पृथ्वी के अदर जितने भी कद पैदा होते है उनकी सब जाती
२ गीलीहल्दी
३ गीली अदरख
४ गीली सूरण
५ वज्रकद
६ हरा कपूर
७ सतावरी
८ विराली लता (सोकानी भोटा फोहुन)
९ कुँवार पाटा थोर
१० थूवर सब जात की
११ गिलोय (गुडवेल)
१२ लसन
१३ वांस करेली
१७ लुणी याने साजी वनस्पति
१८ छोटी पद्मिनी कद
१९ गरमर (कच्छ देशमे प्रसिद्ध है
२० किसलय पत्र
२१ खीर सुआकद
२२ थेग
२३ हरि मोथ
२४ लुण वृक्ष की छाल
२५ खीलोटाकद
२६ अमृत वेली
२७ मूला
२८ भूमी फोडा
२९ वाथले (वथुआ की भाजी

१४ गाजर	३० विरठाहार
१५ पदका की भाजी	३१ कोमल आवली
१६ सुअर वली	३२ आलू, रतालू, पिंडालू

बावीस अभक्ष

१ वडवृक्ष के फल	१२ वडा (ओला)
२ पारस पींपला तथा पीपली के फल	१३ सगतरह की मिट्टी
३ प्लक्ष (पींपला) के फल	१४ रात्री भोजन
४ उंबरा (गुलर) के फल	१५ बहुबीज फल
५ कचुंबर (काल, उम्मर) का फल	१६ अनतकाय
६ मधु	१७ आचार अथाणा
७ मदिरा	१८ घोलवडा
८ मास	१९ वेंगण
९ मक्खन	२० अनाना फल फुल
१० हिम (बरफ)	२१ तुच्छ फल
११ विष (जहर)	२२ चलित रस

नोट— चार महा विगइ मध, मदिरा, मास, मक्खन का अवश्य त्याग करना चाहीये।

काल की मर्यादा

काल की मर्यादा और ऋतुए	मीठाई का काल	पाणी का काल
कार्तीक सुद १५ से फागुण सुद १४ सीयाला	१ महीना	४ प्रहर
फागुण सुद १५ से अषाड सुद १४ उनाला	२० दिन	५ प्रहर
आषाढ सुद १५ से कार्तिक सुद १४ बरसात	१५ दिन	३ प्रहर

नोट—मिठाई के काल मुताबीक आटा, सक्करा आदि का काल समय।

सात व्यसन

१ द्युत-जुआर २ शीकार ३ मांस ४ मदिरा-मद्य ५ वेश्यागमन ६ चोरी ७ परस्त्रीगमन।

नोट— इन व्यसनो का अवश्य त्याग करना चाहीय।